टू द पॉइंट

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

भारत का इतिहास

- सामान्य ज्ञान दृष्टिकोण के साथ, सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम पर आधारित विषय-वस्तु की अध्यायवार प्रस्तुति
- IGNOU, NIOS, NCERT (कक्षा 6–12 तक की नई और पुरानी) व अन्य मानक पुस्तकों की परीक्षोपयोगी अध्ययन सामग्री का संकलन

समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

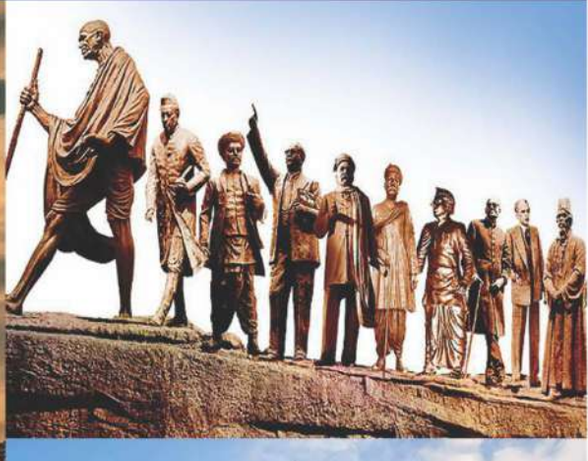

टू द पॉइंट
भारत का इतिहास
CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

टू द पॉइंट

भारत का इतिहास

समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

सामान्य ज्ञान दृष्टिकोण के साथ, सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम पर आधारित
विषय-वस्तु की अध्यायवार प्रस्तुति। IGNOU, NIOS, NCERT
(कक्षा 6-12 तक की नई और पुरानी) व अन्य मानक पुस्तकों
की परीक्षोपयोगी अध्ययन सामग्री का संकलन

संपादक

एन.एन. ओझा

(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)

लेखन व प्रस्तुति

क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

अनुक्रमणिका

प्राचीन भारत का इतिहास

1. **प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत 01-06**
   - पुरातात्विक स्रोत 1
   - साहित्यिक स्रोत 2
   - विदेशी यात्रियों का विवरण 6
2. **प्रागैतिहासिक काल 07-11**
   - पुरापाषाण काल (50,000-8,000 ई.पू.) 7
   - मध्यपाषाण काल (8,000-5,000 ई.पू.) 8
   - नवपाषाण काल (10,000-3,000 ई.पू.) 8
   - ताम्रपाषाणिक संस्कृति (4,500-3,500 ई.पू.) 10
   - दक्षिण भारत: महापाषाण संस्कृति 11
3. **सिंधु घाटी सभ्यता 12-18**
   - सिन्धु सभ्यता का उद्भव 12
   - भौगोलिक स्थिति 12
   - नगर निर्माण योजना 13
   - अर्थव्यवस्था 14
   - सामाजिक व्यवस्था 15
   - धार्मिक व्यवस्था 15
   - सिंधु कालीन लिपि 15
   - सिंधु सभ्यता का पतन 15
   - सिन्धु सभ्यता कालीन प्रमुख नगर 16
4. **वैदिक काल 19-26**
   - ऋग्वैदिक काल (1500 ई.पू.-1000 ई. पू.) 20
   - उत्तर वैदिक काल (1000 ई.पू.-600 ई. पू.) 23
   - सूत्र काल 25
5. **मौर्य साम्राज्य 27-34**
   - मौर्य साम्राज्य की जानकारी के स्रोत 27
   - चन्द्रगुप्त मौर्य (323 ई.पू. से 295 ई.पू.) 27
   - बिन्दुसार (298 ई.पू. से 272 ई.पू.) 28
   - अशोक (273 ई.पू. से 232 ई.पू.) 28
   - मौर्य कालीन प्रशासन 30
   - मौर्य कालीन अर्थव्यवस्था 31
   - मौर्यकालीन बन्दरगाह 32
   - मौर्य कालीन समाज 32
   - मौर्य कालीन धार्मिक स्थिति 33
   - मौर्य कालीन कला 33
6. **धार्मिक आन्दोलन 35-42**
   - भौतिकवादी संप्रदाय 35
   - जैन धर्म 35
   - बौद्ध धर्म 37
   - बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म में समानता एवं असमानता 40
   - भागवत धर्म (वैष्णव धर्म) 41
   - शैव धर्म 41
   - शाक्त धर्म 42
7. **महाजनपद काल 43-47**
   - ऐतिहासिक साक्ष्य 43
   - पुराणों के अनुसार मगध के शासक 45
   - राजनीतिक स्थिति 46
   - महाजनपद कालीन प्रशासन 46
   - महाजनपद कालीन समाज 46
   - महाजनपद कालीन संस्कृति 46
   - विदेशी आक्रमण 47
8. **मौर्योत्तर काल 48-54**
   - शुंग वंश (187 ई.पू. से 75 ई.पू.) 48
   - कण्व वंश (75 ई.पू. से 30 ई.पू.) 48
   - आन्ध्र सातवाहन वंश (30 ई.पू. से 250 ई.) 49
   - विदेशी आक्रमण 49
   - मौर्योत्तर कालीन संस्कृति 51
   - मौर्योत्तर कालीन कला 52
   - मौर्योत्तरकालीन साहित्य 53
   - मौर्योत्तर कालीन समाज 53
9. **गुप्त साम्राज्य 55-62**
   - गुप्त साम्राज्य की जानकारी के स्रोत 55
   - चन्द्रगुप्त प्रथम (319 से 335 ई.) 55
   - समुद्रगुप्त (335-380) 55
   - चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (380 ई. 412 ई.) 56
   - कुमारगुप्त 'महेन्द्रादित्य' (415-454 ई.) 56

- स्कन्दगुप्त (455-467 ई.) (शक्रादित्य) 57
- गुप्तकालीन प्रशासन, कला व संस्कृति 57
- गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था 58
- गुप्तकालीन समाज 59
- धार्मिक व्यवस्था 60
- गुप्त कालीन साहित्य 61

10. गुप्तोत्तर काल 63-66

- वल्लभी के मैत्रक 63
- मगध व मालवा के उत्तरगुप्त 63
- कन्नौज का मौखरि वंश 63
- बंगाल का गौड़ राजवंश 63
- थानेश्वर का पुष्यभूति राजवंश 63
- गुप्तोत्तर कालीन सामाजिक, आर्थिक दशा 64

11. संगम वंश 67-69

- चेर राज्य 67
- चोल राज्य 68
- पाण्ड्य राज्य 68

12. पूर्व मध्य काल 70-78

- राजपूतों की उत्पत्ति 70
- गुर्जर प्रतिहार वंश 70
- गहड़वाल राजवंश 71
- शाकम्भरी के चौहान 71
- जेजाकभुक्ति के चन्देल 72
- मालवा के परमार 73
- गुजरात के चालुक्य अथवा सोलंकी राजवंश 73
- त्रिपुरी का कलचुरि चेदि राजवंश 74
- बंगाल का पाल राजवंश 74
- शाही राजवंश 76
- कश्मीर के राजवंश 76
- भारत पर अरब आक्रमण 77

13. दक्षिण भारत 79-87

- पल्लव वंश 79
- पल्लव कालीन संस्कृति 80
- वातापी के चालुक्य वंश 80
- कल्याणी के चालुक्य 81
- वेंगी के पूर्वी चालुक्य 81
- राष्ट्रकूट राजवंश 82
- राष्ट्रकूट कालीन संस्कृति 84
- चोल राजवंश 84

मध्यकालीन भारत का इतिहास

14. तुर्क आक्रमण, दिल्ली सल्तनत की स्थापना .. 88-92

- मुहम्मद गजनवी का आक्रमण 88
- दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.) 89

15. खिलजी वंश 93-96

- जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी (1290-1296 ई.) 93
- अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) 93

16. तुगलक वंश, सैय्यद वंश तथा लोदी वंश 97-103

- तुगलक वंश (1320-1414 ई.) 97
- सैय्यद वंश (1414-1451 ई.) 101
- लोदी वंश (1451-1526 ई.) 102

17. दिल्ली सल्तनतः प्रशासन, संस्कृति, साहित्य एवं स्थापत्य 104-110

- केन्द्रीय प्रशासन 104
- सल्तनत कालीन स्थापत्य कला 108
- संगीत कला 109
- चित्रकला 109
- भाषा और साहित्य 109

18. प्रांतीय राज्य 111-114

- कश्मीर 111
- जौनपुर 111
- बंगाल 112
- मालवा 113
- मेवाड़ 113
- गुजरात 113
- खानदेश 114
- कामरूप (असम) 114
- उड़ीसा का राज्य 114

19. बहमनी साम्राज्य 115-117

- अलाउद्दीन हसन बहमन शाह 115

20. विजयनगर साम्राज्य 118-124

- संगम वंश (1336-1485 ई.) 118
- सालुव वंश (1485-1505 ई.) 119
- तुलुव वंश (1505-1570 ई.) 120

- अरवीडु वंश (1570-1644 ई.) 120
- विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन..... 121
- विजयनगर साम्राज्य का समाज..... 123
- विजयनगर साम्राज्य के पतन के कारण..... 124

21. भक्ति और सूफी आंदोलन.....125-131

- भक्ति आन्दोलन 125
- सूफी आन्दोलन 129

22. मुगल साम्राज्य.....132-146

- बाबर (1526-1530 ई.)..... 132
- हुमायूँ (1530-1556 ई.) 134
- शेरशाह सूरी (1540-1545 ई.)..... 135
- इस्लामशाह (1545-1555 ई.)..... 137
- अकबर (1556-1605)..... 137
- जहांगीर (1605-1627 ई.) 140
- शाहजहां (1627-1658 ई.) 142
- औरंगजेब (1658-1707 ई.) 144

23. मुगलकालीन प्रशासन.....147-150

- राजत्व का सिद्धान्त..... 147
- मुगलकालीन मुद्रा व्यवस्था 150
- न्याय व्यवस्था..... 150

24. मुगलकालीन स्थापत्य कला एवं संस्कृति...151-156

- स्थापत्य कला..... 151
- मुगलकालीन चित्रकला..... 153
- मुगलकालीन संगीत कला..... 154
- मुगलकालीन साहित्य..... 154
- महत्वपूर्ण पुस्तकों का अनुवाद..... 156

25. मुगल साम्राज्य का पतन 157-161

- राजनीतिक कारण 157
- सामाजिक-आर्थिक कारण 157
- परवर्ती मुगल सम्राट..... 159

26. नवीन राज्यों का उदय.....162-171

- सिख (पंजाब राज्य)..... 162
- अवध राज्य..... 165
- बंगाल राज्य..... 165
- मैसूर राज्य 168
- हैदराबाद राज्य..... 169
- राजपूत राज्य..... 169
- भरतपुर राज्य (जाट) 170
- रूहेलखण्ड तथा फर्रूखाबाद..... 170
- कर्नाटक..... 170
- गुजरात..... 170
- मालवा..... 171
- मेवाड़..... 171
- जौनपुर का साम्राज्य..... 171
- जौनपुर, 'पूरब का शिराज'..... 171
- कश्मीर..... 171
- सिकंदर शाह (1389-1413) 171

27. मराठा साम्राज्य.....172-180

- छत्रपति शिवाजी (1627-1680 ई.)..... 172
- शिवाजी के उत्तराधिकारी..... 176
- पेशवाओं के काल में मराठा शक्ति..... 176
- आंग्ल-मराठा संघर्ष..... 178
- पेशवाओं के अंतर्गत मराठा प्रशासन..... 179

आधुनिक भारत का इतिहास

28. भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन.....181-185

- पुर्तगाली..... 181
- डच..... 182
- अंग्रेज..... 182
- डेनिश..... 183
- फ्रांसीसी..... 183
- आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष..... 184

29. भारत में संवैधानिक तथा स्थानीय स्वायत्त शासन का विकास.....186-191

- 1773 का रेग्यूलेटिंग एक्ट..... 186
- 1781 का संशोधनात्मक अधिनियम..... 186
- 1784 का पिट्स इंडिया एक्ट..... 187
- 1786 का अधिनियम..... 187
- 1793 का चार्टर एक्ट..... 187
- 1813 का चार्टर एक्ट..... 187
- 1833 का चार्टर एक्ट..... 188
- 1853 का चार्टर एक्ट..... 188
- भारत सरकार अधिनियम-1858..... 188
- 1870 का लार्ड मेयो का प्रस्ताव..... 188
- 1882 का लार्ड रिपन का प्रस्ताव..... 189
- भारत परिषद अधिनियम 1861..... 189

- शाही उपाधि अधिनियम, 1876 189
- भारत परिषद अधिनियम-1892 189
- 1908 के विकेन्द्रीकरण आयोग की रिपोर्ट 190
- भारतीय परिषद एक्ट-1909. 190
- भारत सरकार अधिनियम 1919 190
- भारत सरकार अधिनियम 1935 191

30. भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश प्रभाव 192-199

- ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विभिन्न चरण 192
- कृषि का वाणिज्यीकरण 197
- आधुनिक उद्योगों का विकास 198
- औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रवादी आलोचना 198

31. 1857 का विद्रोह 200-205

- 1857 के विद्रोह के कारण 200
- विद्रोह का प्रारम्भ एवं केन्द्र 202
- विद्रोह की असफलता के कारण 203
- 1857 के विद्रोह का परिणाम 204

32. जनजातीय तथा किसान आन्दोलन.....206-218

- प्रमुख नागरिक विद्रोह व जनजातीय विद्रोह 206
- जनजातीय आंदोलन 207
- 20वीं सदी के किसान आन्दोलन 212
- निम्न जातीय आंदोलन 216
- दक्षिण भारत में निम्न जाति आन्दोलन 217
- मजदूर संघ आन्दोलन 217
- प्रमुख श्रमिक आयोग 218

33. धार्मिक तथा सामाजिक जागरण 219-228

- भारत में पुनर्जागरण के कारण 219
- राजा राममोहन राय एवं ब्रह्म समाज 219
- मुस्लिम सुधार आन्दोलन 224
- सिख सुधारवादी आन्दोलन 226
- 19वीं सदी के सामाजिक सुधार 226

34. गवर्नर/गवर्नर-जनरल/वायसराय 229-237

- बंगाल के गवर्नर 229
- बंगाल के गवर्नर जनरल 230
- वायसराय 233

35. भारत में पाश्चात्य शिक्षा का इतिहास...238-240

36. भारत में अकाल नीति का विकास.....241-242

- अंग्रेजों की अकाल के प्रति नीति 241

37. स्वतंत्रता आन्दोलन.....243-287

- स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरण 243
- भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण 243
- प्रारंभिक राजनीतिक संगठन 244
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 246
- स्वतंत्रता आंदोलन का प्रथम चरण 247
- स्वतंत्रता आंदोलन का द्वितीय चरण 248
- स्वतंत्रता आन्दोलन का तृतीय चरण 257

38. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन एवं समाचार-पत्र 288-295

- कांग्रेस के अधिवेशन 288
- समाचार-पत्रें का विकास 291

39. आजादी के बाद का भारत.....296-329

- भारतीय संविधान का निर्माण 296
- नेहरू युग में विभिन्न राजनीतिक पार्टियां 298
- भारत के विभाजन के बाद उत्पन्न तत्कालिक समस्याएं 301
- रियासतों का विलय 303
- भूमि सुधार 305
- शिक्षा 306
- आर्थिक विकास 307
- भारत की विदेश नीति 311
- भारत की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका 314
- आर्थिक सुधार 329

40. भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण वक्तव्य.....330-335

41. प्रमुख ऐतिहासिक स्थल.....336-345

- प्राचीन भारत 336
- मध्यकालीन भारत 341
- आधुनिक भारत 345

42. प्रसिद्ध व्यक्तित्व.....346-351

- प्राचीन काल 346
- मध्यकालीन काल 347
- आधुनिक काल 349
- महापुरुषों के जन्म व निर्वाण तिथियां 350

43. भारतीय इतिहास डायरी.....352-358

- ईसा पूर्व 352
- ईस्वी/सन् 352

01 अध्याय
प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

भारत के प्राचीन साहित्य तथा दर्शन के संबंध में जानकारी के अनेक साधन उपलब्ध हैं, परन्तु भारत के प्राचीन इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के साधन संतोषप्रद नहीं हैं। उनकी न्यूनता के कारण अति प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं शासन का क्रमबद्ध इतिहास नहीं मिलता है। फिर भी ऐसे साधन उपलब्ध हैं, जिनके अध्ययन एवं सर्वेक्षण से हमें भारत की प्राचीनता की कहानी की जानकारी प्राप्त होती है।

प्राचीन इतिहास के स्रोतों को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता है-

1. पुरातात्विक स्रोत
2. साहित्यिक स्रोत
3. विदेशी यात्रियों का विवरण

पुरातात्विक स्रोत

प्राचीन भारत के अध्ययन की दृष्टि से पुरातात्विक स्रोत सर्वाधिक प्रामाणिक माने जाते हैं। इसके अन्तर्गत मुख्यत: अभिलेख, भवन, मूर्तियां, स्मारक, सिक्के आदि आते हैं।

अभिलेख

अभिलेखों के अध्ययन को **'इपीग्राफी'** कहा जाता है।

- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख **हड़प्पा की मुद्राओं** पर मिलता है, किन्तु इसे पढ़ा नहीं जा सका है।
- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के **'बोगाज-कोई'** नामक स्थान से 1400 ई.पू. के अभिलेख को माना जाता है। इस अभिलेख में वैदिक देवताओं **इन्द्र, मित्र, वरुण, नासत्य** (अश्विनी कुमार) का नाम मिलता है।
- अशोक के **ब्राह्मी लिपि** में लिखे अभिलेख को सर्वप्रथम **1837 ई.** में **जेम्स प्रिंसेप** ने पढ़ा।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख सम्राट अशोक के हैं।
- अशोक के अभिलेख, **ब्राह्मी, आरमाइक, खरोष्ठी** तथा **यूनानी** लिपियों में है; किन्तु अशोक के अधिकतर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है।
- भारत के लगभग सभी लिपियों का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। इसमें प्रमुख हैं- नागरी, गुजराती, बांग्ला, तमिल, कन्नड़, तेलुगू और मलयालम आदि।
- **खरोष्ठी लिपि फारसी लिपि की तरह दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है।** लिपियों के विकास का अध्ययन **'पुरालिपि विद्या'** के अन्तर्गत किया जाता है।
- गुप्त काल के पूर्व के अभिलेख **प्राकृत भाषा** में हैं तथा गुप्त और गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख **संस्कृत भाषा** में हैं।
- रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख (दूसरी शताब्दी ईस्वी) में **संस्कृत भाषा** में लिखे अभिलेख का प्राचीनतम उदाहरण है।
- राजकीय अभिलेखों के अलावा गैर राजकीय अभिलेख भी लिखे गये। गैर राजकीय अभिलेखों में यवन राजदूत **हेलियोडोरस का बेसनगर का गरुड़ स्तम्भ लेख** (द्वितीय शताब्दी ई.पू.) प्रमुख है। इससे भारत में **भागवत धर्म** के विकास का साक्ष्य मिलता है।
- अभिलेख सम्बन्धित काल के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक स्थिति को जानने के प्रमुख स्रोत हैं।

स्मरणीय अभिलेख

अभिलेख	शासक	विषय
हाथी गुम्फा अभिलेख (तिथि रहित अभिलेख)	कलिंग राज - खारवेल	भारत वर्ष का प्रथम उल्लेख खारवेल के शासन काल की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण मिलता है।
भितरी एवं जूनागढ़ अभिलेख	स्कन्दगुप्त एवं रुद्रदामन की जानकारी प्राप्त होती है।	स्कन्दगुप्त एवं रुद्रदामन के जीवन की घटनाओं का विवरण मिलता है।
नासिक अभिलेख	गौतमी बलश्री द्वारा लिखा गया	गौतमी पुत्र सातकर्णी के सैनिक सफलताओं तथा सातवाहन शासन की अन्य जानकारियों का वर्णन मिलता है।
प्रयाग स्तम्भ लेख	समुद्रगुप्त	समुद्रगुप्त की विजयों एवं नीतियों का पूरा विवेचना मिलता है।
मन्दसौर अभिलेख	मालवा नरेश यशोधर्मन	यशोधर्मन की सैनिक उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।
ऐलोह अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय	हर्ष-पुलकेशिन II के युद्ध का विवरण मिलता है।

अभिलेखों में प्रयुक्त लिपियां

1. **प्राकृत लिपि**	आरंभिक अभिलेख **प्राकृत भाषा** में है।
2. **ब्राह्मी लिपि**	अशोक के शिलालेख **ब्राह्मी लिपि** में है। यह लिपि **बाएं से दाएं** लिखी जाती थी।
3. **खरोष्ठी लिपि**	अशोक के कुछ शिलालेख खरोष्ठी लिपि में है, जो **दाएं से बाएं** लिखी जाती थी।
4. **यूनानी एवं अरामाइक लिपि**	पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान में अशोक के शिलालेखों में इन लिपियों का प्रयोग हुआ है।

02 अध्याय प्रागैतिहासिक काल

प्रागैतिहासिक काल मानव अतीत के उस भाग को कहते हैं, जब मानव का अस्तित्व तो था, परन्तु लेखन कला का आविष्कार नहीं हुआ था। विश्व इतिहास में लेखन कला का आरंभ सबसे पहले मेसोपोटामिया सभ्यता में लगभग 3200 ई.पू. से माना जाता है। इस तरह प्रागैतिहास काल लगभग 33 लाख वर्ष पहले होमिनिन मानव द्वारा पत्थर के उपकरणों के प्रथम उपयोग और 3200 ई.पू. में लेखन प्रणालियों के आविष्कार के बीच की अवधि है।

जिस काल का इतिहास पूर्णत: पुरातात्विक साधनों पर निर्भर होता तथा कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं होता, उसे 'प्रागैतिहासिक काल' कहते हैं।

- 1778 ई. में वेंजामिन फ्रैकलिन ने मानव को औजार बनाने वाला प्राणी कहा था।
- डॉ. प्राइमरोज ने भारतीय प्रागैतिहास को उद्घाटित किया। उन्होंने 1842 ई. में रायचूर जिले (कर्नाटक) से प्रागैतिहासिक औजारों की खोज की। रॉबर्ट ब्रुस फुट ने 1863 ई. में भारत के पाषाण कालीन बस्तियों के अन्वेषण की शुरुआत की।
- भारतीय भू-वैज्ञानिक एवं पुरातत्वविद् **'रॉबर्ट ब्रुस फुट'** ने 1863 में चेन्नई के निकट हस्त कुठार खोजा था। रॉबर्ट ब्रुस फुट को भारत के 'प्रागैतिहासिक पुरात्व का जनक' कहा जाता है।
- भारतीय पुरापाषाण युग को मानव द्वारा इस्तेमाल किये गये पत्थर एवं औजारों के **स्वरूप** और **जलवायु** में होने वाले परिवर्तन के आधार पर तीन भागों में बांटा गया है- 1. पुरापाषाण काल, 2. मध्य पाषाण काल 3. नव पाषाण काल।

पुरापाषाण काल (50000-8000 ई.पू.)

पुरापाषाण काल को पुन: निम्न पुरापाषाण युग, मध्य पुरापाषाण युग एवं उच्च पुरापाषाण युग में विभाजित किया गया है।

- इस काल के मानव की जीविका का मुख्य आधार शिकार था तथा उनके मुख्य हथियार हैण्ड-एक्स, क्लीवर, स्क्रैवर था। पुरापाषाण काल के अवशेष सोहन नदी घाटी, बेलन नदी घाटी, नर्मदा नदी घाटी, भोपाल के पास भीमबेटका नामक स्थान से मिले हैं।

पुरापाषाण क्षेत्रों का वर्गीकरण

पुरापाषाण काल	संस्कृति	स्थान
निम्न पाषाण युग	चॉपर, चपिंग, पेबुल संस्कृति	सोन घाटी (म.प्र.) बेलन घाटी, सोहन घाटी (पाकिस्तान)
मध्य पुरापाषाण युग	फलक संस्कृति	सोन घाटी (म.प्र.), नर्मदा घाटी (म.प्र.), बेलन घाटी (उ.प्र.), तुंगभद्रा घाटी (कर्नाटक)
उच्च पुरापाषाण युग	ब्लेड संस्कृति	बेलन घाटी, मध्य भारत, छोटानागपुर पठार, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्रा

- **भीमबेटका से पुरापाषाण कालीन चित्रित गुफाएं मिली हैं।**
- भीमबेटका की खोज 1958 में वी.एस. वाकणकर ने किया था।
- पुरापाषाण काल में **अग्नि का आविष्कार** हुआ।
- होमोसेपिन्स का उदय भी इसी काल में हुआ।

पुरापाषाण कालीन स्थल

स्थल	राज्य	प्राप्त साक्ष्य
भीमबेटका	मध्य प्रदेश (नर्मदा घाटी)	शैलाश्रय निवास के प्रमाण
पल्लवरम्	मद्रास	भारत में सर्वप्रथम हैण्ड-एम्स के प्रमाण मिले हैं।
लोहदानाला	उत्तर प्रदेश	लोलन नदी घाटी में अस्थि निर्मित **मातृ देवी** की प्रतिमा मिली है।
नेवासा व चिरकी	महाराष्ट्र	मध्य पुरापाषाणिक युगीन उच्च कोटि के उपकरण मिले हैं।

भौगोलिक स्थिति

गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र को छोड़कर भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी क्षेत्रों से पुरापाषाण कालीन स्थल प्राप्त हुए हैं। जैसे कश्मीर में समथन एवं पहलगाम, पाकिस्तान में सोहन घाटी, पंजाब में चौतरा, राजस्थान में डिडवाना, गुजरात में रतनपुरा, उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी, मध्य प्रदेश में भीमबेटका आदि।

जलवायु संबंधी स्थिति

पुरापाषाण काल प्लिस्टोसीन युग से सबद्ध रहा, जब वातावरण में ठंडक अधिक थी, परंतु निम्नपुरापाषाण से उच्चपुरापाषाण काल तक वातावरण शुष्क तथा गर्म होने लगा।

संस्कृति

इस काल में मानव ने प्रकृति के साथ धीरे-धीरे संबंध स्थापित करना आरंभ कर दिया था, इसलिए धर्म और कला का विकास होने लगा।

(i) बेलनघाटी में **लोहंदानाला तथा राजस्थान में बागौर नामक स्थल से स्त्री की मूर्ति मिली** है, जिसकी पहचान देवी से की जा रही है।

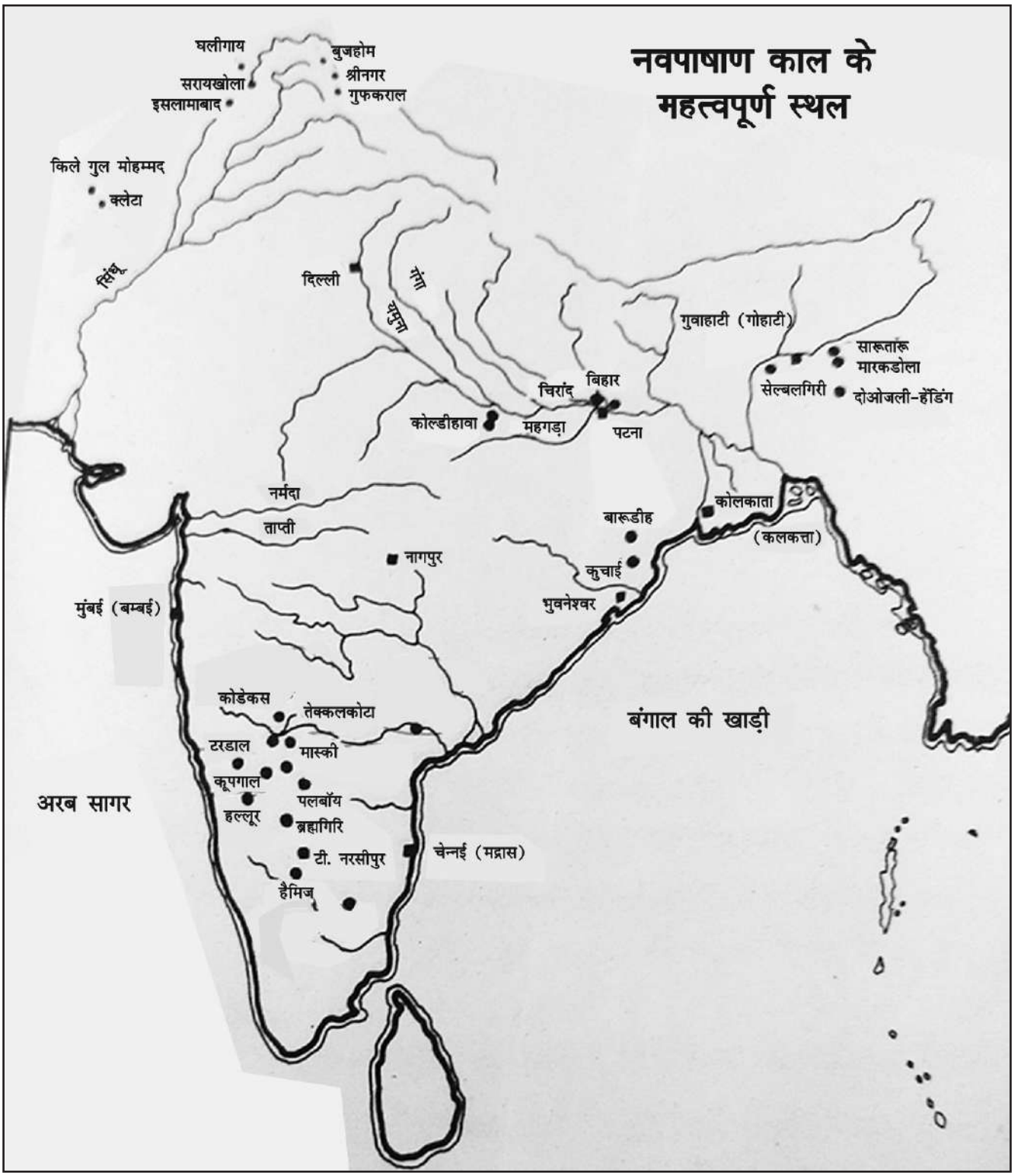

- पूर्वोत्तर भारत में नवपाषाण कालीन संस्कृति की खोज सर्वप्रथम 1867 ई. में जान लुब्बक ने ब्रह्मपुत्र घाटी से की थी।
- **मेहरगढ़** से **कृषि करने के प्राचीनतम साक्ष्य** मिले हैं। इस काल में मानव ने स्थायी निवास करना प्रारम्भ कर दिया। भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के प्राचीनतम् साक्ष्य **लहुरादेव** से प्राप्त हुए हैं।
- **कुम्भकारी** सर्वप्रथम इसी काल में दृष्टिगोचर होती है।
- **पहिये** व **कृषि** का आविष्कार नवपाषाण काल की देन थी।
- **अग्नि का उपयोग करना मानव ने इसी काल में सीखा।**
- नवपाषाण काल के अन्तिम चरण में धातुओं का प्रयोग प्रारम्भ हो गया तथा सर्वप्रथम प्रयोग की जाने वाली धातु **'तांबा'** थी।

03 अध्याय सिंधु घाटी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता है, जो मुख्य रूप से दक्षिण एशिया के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में, जो आज उत्तर-पूर्व अफगानिस्तान, पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम और उत्तर भारत में फैली है। प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया की प्राचीन सभ्यता के साथ, यह प्राचीन दुनिया की सभ्यताओं के तीन शुरुआती कालक्रमों में से एक थी और इन तीनों में सबसे व्यापक तथा सबसे चर्चित थी।

सर्वप्रथम **चार्ल्स मैसान** ने 1826 ई. में हड़प्पा के टीलों के बारे में लिखा था। भारतीय पुरातत्व विभाग के जन्मदाता **अलेक्जेंडर कनिंघम** थे। इसकी नींव वॉयसराय **लार्ड कर्जन** के काल में पड़ी।

- दयाराम साहनी ने 1921 ई. में हड़प्पा तथा राखलदास बनर्जी ने 1922 ई. में मोहनजोदड़ो की खोज की। इस समय भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिर्देशक जान मॉर्शल थे।
- हड़प्पा सभ्यता को निम्नलिखित नामों से जाना जाता है; जैसे सिन्धु सभ्यता, सिन्धु सरस्वती सभ्यता, कांस्य युगीन सभ्यता आदि।
- सिन्धु सभ्यता के लोगों ने ही पहली बार **तांबा** व **टिन** मिलाकर **कांसा** तैयार किया। अत: इसे कांस्य युगीन सभ्यता कहा जाता है। भारत में पहली बार नगरों का उदय इसी समय हुआ। रेडियो कार्बन विधि के आधार पर सिन्धु सभ्यता का कालक्रम 2350 ई. पू. से 1750 ई.पू. निर्धारित किया गया है, जो सर्वाधिक मान्य है।
- सर मार्टीमर व्हीलर ने सिन्धु सभ्यता का काल क्रम 2500 ई.पू. से 1500 ई.पू. डी.पी. अग्रवाल ने 2350 ई.पू. से 1750 ई.पू. मैके ने 2800 ई.पू. से 2500 ई.पू.; जबकि मार्शल ने 3250 ई.पू. से 1750 ई.पू. माना है।
- सिन्धु सभ्यता से प्रोटो आस्ट्रेलायड, भू-मध्य सागरीय, मंगोलायड तथा अल्पाइन प्रजातियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- **प्रोटोआस्ट्रेलायड** सिन्धु क्षेत्र में आने वाली प्रथम प्रजाति थी।
- **भू-मध्यसागरीय (मेडिटेरियन) प्रजाति** सिन्धु सभ्यता की मुख्य निर्माता थी।

सिन्धु सभ्यता का उद्भव

सिन्धु सभ्यता के उद्भव के सम्बन्ध में दो मत मिलते हैं-
1. विदेशी उद्भव का मत, 2. स्वदेशी उद्भव का मत।

- विदेशी उद्भव के मत को मानने वाले प्रमुख विद्वान हैं- जॉन मार्शल, गार्डन चाइल्ड, क्रेमर, डी.डी. कौशाम्बी तथा स्वदेशी उद्भव के मत के समर्थक अमलानन्द घोष, डी.पी. अग्रवाल, एस.आर. राव आदि हैं।
- हड़प्पा सभ्यता का उदय ताम्र-पाषाणिक पृष्ठभूमि में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में हुआ।
- अब तक सिन्धु सभ्यता की **1400 बस्तियां** खोजी गयी हैं, जिसमें **925 बस्तियां** भारत में और **475 बस्तियां** पाकिस्तान में है।

हड़प्पा कालीन स्थल, नदी एवं उत्खननकर्त्ता

स्थल	नदी	उत्खननकर्त्ता
मोहनजोदड़ो	सिंधु नदी	राखल दास बनर्जी एवं मार्टिमर व्हीलर
रोपड़	सतलज नदी	यज्ञदत्त शर्मा
चन्हूदड़ो	सिंधु नदी	गोपाल मजूमदार एवं अर्नेस्ट मैके
कालीबंगा	घग्घर नदी	अमलानंद घोष एवं ब्रजवासी लाल
बनवाली	सरस्वती नदी	रविन्द्र सिंह बिष्ट
लोथल	भोगवा नदी	रंगनाथ राव
सुत्कांगेंडोर	दाश्क नदी	सर मार्क आरेल स्टाइन
हड़प्पा	रावी नदी	दयाराम साहनी, माधव स्वरूप वत्स एवं व्हीलर

- अब तक प्राप्त बस्तियों में **80 प्रतिशत बस्तियां सिंधु एवं गंगा** के बीच के मैदान में स्थित है।

भौगोलिक स्थिति

वर्तमान में भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान में सिन्धु सभ्यता का विस्तार मिलता है। अफगानिस्तान में सिन्धु सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल हैं- **मुण्डीगाक** और **शोर्तुगई**।

- पाकिस्तान में मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, आमरी, डाबरकोट, बालाकोट, कोटिदीजी, अलीमुराद सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थल हैं।
- भारत के जम्मू में मण्डा, पंजाब में रोपड़ व संघोल, हरियाणा में बनावली, मिताथल, राखीगढ़ी, सिसबल, राजस्थान में कालीबंगा, उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर, गुजरात में देशलपुर, सुरकोटदा, धौलावीरा, लोथल, रंगपुर, रोदजी आदि स्थानों से सिन्धु सभ्यता के स्थल प्राप्त हुए हैं।
- सिन्धु सभ्यता का **सबसे उत्तरी स्थल जम्मू में स्थित माण्डा** है, जबकि सबसे दक्षिणी स्थल महाराष्ट्र में स्थित दैमाबाद है। दोनों एक-दूसरे से 1400 किमी दूरी पर स्थित हैं।
- सिन्धु सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल आलमगीरपुर तथा सबसे पश्चिमी स्थल सुत्कागेण्डोर है। दोनों एक-दूसरे से 1600 किमी. दूर हैं।
- सभ्यता का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किमी. है। सिन्धु घाटी सभ्यता के स्थलों की कुल संख्या लगभग 1500 हो गयी है।

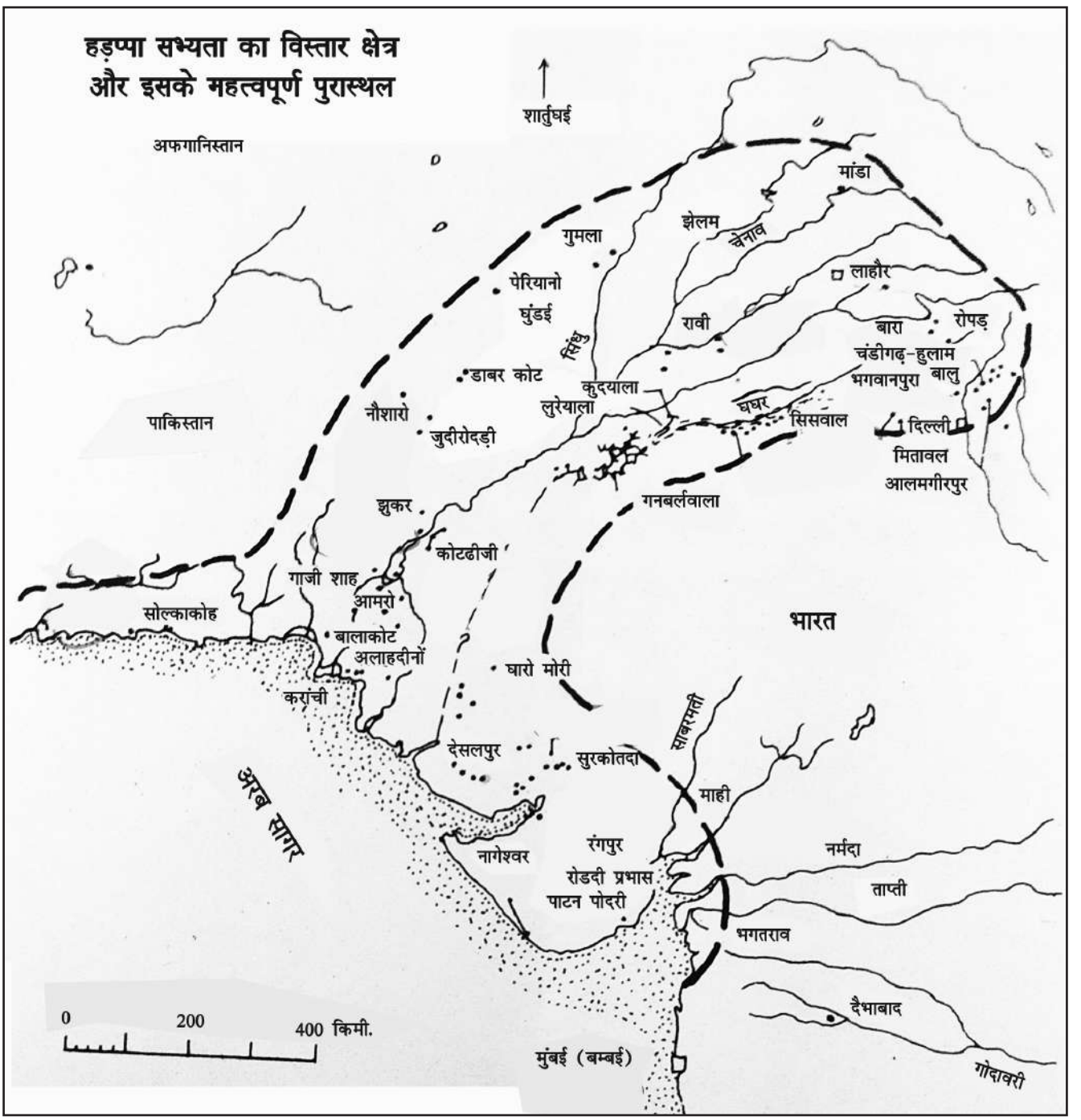

- हड़प्पाकालीन नगरों को तीन कालों- प्राक् हड़प्पा, हड़प्पा एवं हड़प्पोत्तर में बांटा गया है।
- **प्राक् हड़प्पा स्थल:** जो स्थल हड़प्पा के पूर्व भी विद्यमान थे। जैसे- अफगानिस्तान में मुंडीगाक, पाकिस्तान में किलेगुल मोहम्मद, दम्बसदात, कुल्ली तथा मेहरगढ़, हड़प्पा। भारत में **राखीगढ़ी** एवं **बनवाली, कालीबंगा** से प्राक्-सैंधव के प्रमाण मिले हैं।
- **हड़प्पोत्तर कालीन स्थल:** जैसे, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो इत्यादि।
- **हड़प्पा कालीन स्थल:** रोजदी, रंगपुर।
- **तीनों कालों के स्थल:** सुरकोटदा, धौलावीरा, राखीगढ़ी एवं मांडा।

नगर निर्माण योजना

हड़प्पा सभ्यता नगरीय सभ्यता थी, किन्तु केवल 6 स्थलों- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, धौलावीरा, राखीगढ़ी, कालीबंगा तथा **गणवारीवाला** को ही बड़े नगरों की संज्ञा दी गई थी। सिन्धु सभ्यता के नगर व्यवस्थित रूप में बसाये गए थे। इनकी सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी।

- सिन्धु सभ्यता के नगर सामान्यत: दो भागों में विभक्त थे- पश्चिमी टीला तथा पूर्वी टीला। पश्चिमी टीले पर दुर्ग या किले स्थित थे तथा पूर्वी टीले पर आवास क्षेत्र था।

04 अध्याय वैदिक काल

वैदिक सभ्यता प्राचीन भारत की सभ्यता है, जिसमें वेदों की रचना हुई। भारतीय विद्वान तो इस सभ्यता को अनादि परंपरा से प्रस्फुटित हुआ मानते हैं। महाजनपद काल का समय 600 ईसा पूर्व से 322 ईसा पूर्व माना गया है। बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय व जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।

वैदिक शब्द वेद से बना है। वेद का अर्थ होता है 'ज्ञान'। आर्य संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ श्रेष्ठ है।

- वैदिक साहित्य को श्रुति साहित्य, नृत्य संहिता भी कहा जाता है। आर्यों के मूल निवास स्थान के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है।
- दयानन्द सरस्वती **'तिब्बत'**, बाल गंगाधर तिलक **'उत्तरी ध्रुव'**, मैक्समूलर **'मध्य एशिया'**, गंगानाथ झा ब्रह्मर्षि देश को आर्यों का मूल निवास स्थान मानते हैं।
- वैदिक संस्कृति को दो भागों में ऋग्वैदिक काल तथा उत्तर वैदिक काल में विभाजित किया जाता है। ऋग्वैदिक काल या पूर्व वैदिक काल को 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तथा उत्तर वैदिक काल को 1000 ई.पू. से 600 ई. पू. के बीच माना जाता है।

वैदिक संस्कृति के पुरातात्विक साक्ष्य	
ऋग्वैदिक	1. काले एवं लाल मृद्भाण्ड 2. ताम्र पुंज 3. गेरुवर्णी मृद्भाण्ड (OCP)
उत्तर वैदिक	चित्रित धूसर मृद्भाण्ड (P.G.W.)
उत्तरी मौर्य युग	उत्तरी काली पॉलिश वाले मृद्भाण्ड (N.B.P.W.)

आर्यों के मूल स्थान के सम्बन्ध में विद्वानों के विचारों में मतैक्य नहीं है। प्रमुख विचार निम्नलिखित हैं-

उत्तरी ध्रुव	**बालगंगाधर तिलक**
तिब्बत	स्वामी दयानन्द सरस्वती
ब्रह्मर्षि देश (भारत)	पं. गंगानाथ झा
मुल्तान के निकट	डी.एस. त्रिवेदी
पामीर का पठार	एडवर्ड मेयर (एम. ओल्डेन वर्ग तथा प्रोफेसर कीथ ने इसका समर्थन किया है।
मध्य एशिया	मैक्समूलर (के. एम. पनिक्कर ने इसका समर्थन किया है।)
दक्षिणी रूस	गार्डन चाइल्ड
जर्मनी	पेन्का
यूरोप	फिलिप्पो सेक्षरी तथा विलियम जोन्स
सप्त सिन्धु प्रदेश	अविनाश चन्द्र दास

वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य के अन्तर्गत चारों वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक व उपनिषद आते हैं।

ऋग्वेद : ईश्वर की महिमा (देवताओं की स्तुति)
यजुर्वेद : कर्मकांड (बलिदान विधि)
सामवेद : संगीत का विस्तृत उल्लेख
अथर्ववेद : औषधियों से संबंधित

- ऋग्वेद के प्रमुख मण्डलों के रचयिता

मण्डल	सम्बन्धित ऋषि
प्रथम	मधुच्छन्दा, दीर्घतमा, अंगिरा
द्वितीय	गृत्समद
तृतीय	विश्वामित्र (गायत्री मंत्र)
चतुर्थ	वामदेव (कृषि संबंधी प्रक्रिया)
पंचम्	अत्रि
षष्टम्	भारद्वाज
सप्तम्	वशिष्ट (शिक्षा) (दशराज युद्ध का वर्णन)
अष्टम्	कण्व
नवम्	पवमान, अंगिरा (सोम का वर्णन)
दशम्	क्षुद्र सूक्तीय, महासूक्तीय (वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति)

- प्रथम मण्डल के 50 सूक्तों का निर्माण भी कण्व वंश के ऋषियों ने किया।
- वेदों का संकलन महर्षि **कृष्ण द्वैपायन** ने किया था।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद को सम्मिलित रूप में **वेदत्रायी** कहा जाता है।
- शतपथ ब्राह्मण यजुर्वेद का ब्राह्मण है। प्राचीन इतिहास के साधन के रूप में वैदिक साहित्य में ऋग्वेद के बाद शतपथ ब्राह्मण का स्थान है। कर्मकांडों के अतिरिक्त इसमें सामाजिक विषयों का वर्णन है। **पुरुष सेध** का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में ही हुआ है।
- अथर्ववेद को **वेदत्रायी** में सम्मिलित नहीं करते हैं, क्योंकि इसमें लौकिक विषयों का वर्णन है।
- ऋग्वेद आर्यों का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें देवताओं की स्तुति करने वाले गीत हैं। ऋग्वेद में **10 मंडल, 1028 सुक्त, 10580 मंत्र** हैं।

05 अध्याय

मौर्य साम्राज्य

मौर्य वंश प्राचीन भारत का एक महान एवं शक्तिशाली राजवंश था। इसने 137 वर्षों तक भारत में शासन किया। इसकी स्थापना का श्रेय चंद्रगुप्त मौर्य एवं उसके मंत्री चाणक्य को दिया जाता है, जिन्होंने नंद वंश के सम्राट धनानंद को पराजित किया। यह साम्राज्य पूर्व में मगध राज्य में गंगा नदी के तट से शुरू हुआ। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।

भारत पर अलेक्जेंडर के आक्रमण के समय नंद वंश के शासन के अंतर्गत मगध सबसे प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा।

- नंदों के उत्तराधिकारी मौर्यों के अधीन मगध का विकास अपने चरम पर पहुंच गया। मौर्य साम्राज्य भारतीय इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ। भारत के इतिहास में पहली बार सुदूर उत्तर-पश्चिम तक फैले उपमहाद्वीप का एक बड़ा हिस्सा एक वृहत मौर्य सामाज्य के अधीन था।

मौर्य साम्राज्य की जानकारी के स्रोत

1. अर्थशास्त्र, 2. इण्डिका, 3. रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख 4. विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, 5. अशोक के अभिलेख, 6. बौद्ध ग्रन्थ, 7. जैन ग्रन्थ, 8. जस्टिन, प्लूटार्क, एरियन आदि के विवरण।

- नन्द वंश के अन्तिम शासक धनानन्द को मार कर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
- यूनानी लेखकों ने चन्द्रगुप्त मौर्य को **सेन्ड्रोकोट्स** कहा है।
- सर विलियम जोन्स ने चन्द्रगुप्त मौर्य को सेन्ड्रोकोट्स कहा है।
- मौर्य के पुरोहित तथा मंत्री चाणक्य ने अर्थशास्त्र की रचना की। चाणक्य के अन्य नाम हैं- **विष्णुगुप्त** और **कौटिल्य**।
- कौटिल्य को भारत का **मैकियावेली** कहा जाता है।
- अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण (भाग), 180 प्रकरण, 6000 श्लोक हैं।

मौर्य शासक	
चन्द्रगुप्त मौर्य	322 ईसा पूर्व- 298 ईसा पूर्व
बिन्दुसार	297 ईसा पूर्व- 272 ईसा पूर्व
अशोक	273 ईसा पूर्व- 232 ईसा पूर्व
दशरथ मौर्य	232 ईसा पूर्व- 224 ईसा पूर्व
सम्प्रति	224 ईसा पूर्व- 215 ईसा पूर्व
शालिसुक	215 ईसा पूर्व- 202 ईसा पूर्व
देववर्मन्	202 ईसा पूर्व- 195 ईसा पूर्व
शतधान्वन् मौर्य	195 ईसा पूर्व- 187 ईसा पूर्व
बृहद्रथ मौर्य	187 ईसा पूर्व- 185 ईसा पूर्व

- अर्थशास्त्र को डॉ. शाम शास्त्री ने सर्वप्रथम **1909** में प्रकाशित करवाया।
- अर्थशास्त्र के छठे अधिकरण में राज्य के **साप्तांगों** का वर्णन है।
- कौटिल्य (चाणक्य) द्वारा मौर्य काल में रचित अर्थशास्त्र शासन के सिद्धांतों की पुस्तक है। इसमें राज्य के सप्तांग सिद्धांत- राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड एवं मित्र की सर्वप्रथम व्याख्या मिलती है। अर्थशास्त्र से तत्कालीन प्रशासन एवं कृषि व्यवस्था की भी विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

कौटिल्य ने राज्य को सात तत्वों से निर्मित बताया है-	
1. स्वामी (राजा)	यह राज्य के सिर तुल्य है
2. अमात्य	ये राज्य की आंखें हैं।
3. जनपद	ये राज्य की जंघाएं है।
4. कोष अर्थात धन	ये राज्य का मुख है।
5. दण्ड अर्थात सेना	ये राज्य का मस्तिष्क है।
6. दुर्ग अर्थात किले	ये राज्य की बाहें हैं।
7. मित्र	ये राज्य के कान हैं।

- मेगास्थनीज सेल्यूकस का राजदूत था, जो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था।
- मेगास्थनीज ने **इण्डिका** नामक ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है, किन्तु यूनानी लेखकों एरियन, स्ट्रेबो, प्लूटार्क, प्लिनी, जस्टिन आदि के उद्धरणों में मिलता है।
- मेगास्थनीज की इण्डिका को **डॉ. स्वानवेग** ने सर्वप्रथम 1846 ई. में इन समस्त उद्धरणों को संग्रहीत करके प्रकाशित किया था।

चन्द्रगुप्त मौर्य (323-295 ई.पू.)

ब्राह्मण साहित्य (पुराण आदि) चन्द्रगुप्त मौर्य को शूद्र, बौद्ध व जैन साहित्य क्षत्रीय बताते हैं। यूनानी लेखक प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख की सेना लेकर सम्पूर्ण भारत को रौंद डाला।

- चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर को परास्त किया। उसके बाद सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य को एरिया (हेरात), आराकोसिया (कान्धार), जेड्रोसिया तथा पेरोपनिसडाई (काबुल) का क्षेत्र दिया।

06 अध्याय धार्मिक आन्दोलन

600 ई.पू. में भारत में एक धार्मिक आंदोलन आरंभ हो गया जिसने भारतीय जनमानस को बौद्धिक रूप से आंदोलित कर दिया। 6ठी शताब्दी ई.पू. का काल बौद्धिक चिंतन का युग माना जाता है।

छठी शताब्दी में गंगा घाटी में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ। इन आंदोलनों में बौद्ध एवं जैन धर्म महत्वपूर्ण थे।

- इसी समय विश्व में अनेक देशों में बौद्धिक आंदोलन के प्रमाण मिलते हैं। जैसे चीन में **कनफ्यूशियस**, ईरान में **जरथुष्ट्र** तथा यूनान में **पाइथागोरस**। भारत में नवीन धार्मिक आंदोलनों के उद्भव के अनेक कारण थे, जैसे-
  1. वैदिक धर्म कर्मकाण्डों के कारण अपनी पवित्रता खो चुका था।
  2. वैदिक युग के बाद वर्ण जाति में परिवर्तित हो चुके थे। जातीय श्रेष्टता को प्राप्त करने के लिए नए धर्मों का उदय हुआ।
  3. लोहे के आविष्कार के कारण कृषि क्षेत्र में क्रान्ति आयी, अत: पशुओं की मांग कृषि क्षेत्र में बढ़ी, फलस्वरूप अहिंसावादी आंदोलनों का जन्म हुआ।

भौतिकवादी संप्रदाय

पूरणकश्यप नामक ब्राह्मण **'घोर अक्रियावाद'** में विश्वास करता था। इसका विश्वास था कि कर्मों का कोई फल नहीं होता। उसके अनुसार न तो भले एवं शुभ कार्य करने में कोई पुण्य और न किसी की हत्या करने से कोई अशुभ कार्य होता है।

- मक्खलिपुत्र गोशाल ने आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना की। गोशाल की शिक्षा का मूलाधार अक्रियावाद तथा नियतिवाद था।
- इसके अनुसार प्राणी नियति के अधीन है। उसमें न बल है न पराक्रम।
- अजीत केशकंबली नामक आचार्य नितांत भौतिकवादी या उच्छेदवादी था। इसके अनुसार पृथ्वी, जल, वायु तथा अग्नि से शरीर निर्मित है। मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं बचता।
- पाप-पुण्य तथा सत्य-असत्य की कल्पना झूठी है। इसका संबंध लोकायत सूत्र से है।

क्र.	प्रवर्तक	मत
1.	पूरण कश्यप	घोर अक्रियावादी
2.	मक्खलिपुत्र गोशाल	नियतिवादी (भाग्यवाद)
3.	अजीत केशकंबली	नितान्त भौतिकवादी
4.	पकुध कच्चायन	भौतिकवादी
5.	संजयवेलट्ठिपुत्त	सन्देहवादी

- पकुध कच्चायन नित्यवादी थे, जो पुनर्जन्म तथा कर्म को नकारता है। इसके अनुसार सात तत्वों; पृथ्वी, तेज, जल, वायु, सुख, दुख और जीवन अनियमित और बाध्य हैं।
- संजय वेट्ठलिपुत्त **'अनिश्चयवादी** अथवा **संदेहवादी'** था। उसके अनुसार न यही कहा जा सकता है कि परलोक है और न यह कि परलोक नहीं है।

जैन धर्म

जैन धर्म के संस्थापक महावीर स्वामी थे। जैन संस्थापकों को तीर्थंकर कहा गया है। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर **ऋषभदेव** या आदिनाथ थे। इनका उल्लेख **ऋग्वेद** से भी मिलता है। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए है:

जैन धर्म के 24 तीर्थंकर

तीर्थंकर शब्द जैन धर्म से संबंधित है। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर हुए माने जाते हैं, जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया। ये हैं-

ऋषभदेव	सुविधिनाथ	कुंथुनाथ
अजितनाथ	शीतलनाथ	अरहनाथ
संभवनाथ	श्रेयासनाथ	मल्लिनाथ
अभिनंदन	वासुपूज्य	मुनिसुव्रत
सुमतिनाथ	विमलनाथ	नेमिनाथ
पद्मप्रभ	अनंतनाथ	अरिष्टनेमि
सुपार्श्वनाथ	धर्मनाथ	पार्श्वनाथ
चंद्रप्रभु	शांतिनाथ	महावीर स्वामी

- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे, जबकि 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी थे। पार्श्वनाथ के पिता काशी के राजा अश्वसेन थे। पार्श्वनाथ को 83 दिन की तपस्या के बाद सम्मेद पर्वत पर ज्ञान प्राप्त हुआ।
- पार्श्वनाथ के अनुयायियों को **'निर्ग्रन्थ'** कहा जाता था। महावीर स्वामी के पिता भी पार्श्वनाथ के अनुयायी थे। पार्श्वनाथ ने नारियों को भी अपने धर्म में प्रवेश दिया।
- पार्श्वनाथ ने चार शिक्षाएं सत्य, अहिंसा, अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (सम्पत्ति न रखना) अपने अनुयायियों को दी।
- जैन धर्म के **24वें** तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म 599 ई. पू. अथवा 540 ई.पू. वैशाली के निकट कुण्डग्राम में हुआ था।